Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 1, JAN - 2022 Publication Date: 31/01/2022

DOIs:10.2018/SS/202201003 --:-- Research Article

खण्ड़काव्य में माधव कौशिक का योगदान

हरी राम
शोधार्थी, पी.एच.डी, हिन्दी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, धारवाड़, कर्नाटक, भारत
Email: harigeetaarpita@gmail.com

सारांश : माधव कौशिक का साहित्य वर्तमान युग की वास्तविकता को प्रदर्शित करने वाला साहित्य है। इन्होंने अपने साहित्यों में गजल, खण्ड़काव्य, नवगीत, बाल साहित्य आदि प्रमुख है। इनके प्रमुख खण्ड़काव्यों में 'सुनो राधिका' तथा 'लौट आओ पार्थ' आदि मुख्य स्थान रखते हैं। इन्होंने अपने खण्डकाव्य में समकालीन वास्तविकता का बड़े ही सजीव ढंग से चित्रण किया गया है। इन्होंने अपने खण्ड़काव्य में मानवता को महत्व, श्रद्धा एवं प्रेम को महत्व, देश एवं समाज को विशेष स्थान, नैतिकता को महत्व दिया है साथ ही अन्याय एवं अव्यवस्था का विरोध किया है। इन्होंने सत्य और सच्चाई को स्वीकार करने एवं उसका आचरण करने पर बल दिया है। इनका मानना है कि व्यक्ति को अन्याय का विरोध करना चाहिए। भावनाओं को स्थान दिया है और कहा है कि भावना मानव में प्रेम का विकास होता है। समाज में भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए लोगों में नैतिकता का विकास किया जाना चाहिए। इन्होंने युद्ध का विरोध किया है क्योंकि युद्ध के बाद विनाश ही विनाश होता है। उनमें न्याय, समानता, प्रेम, त्याग आदि गुणों का विकास किया जाना चाहिए।

शोध कुंजी : खण्ड़काव्य, मानवता, सत्य, प्रेम न्याय ।

परिचय : खण्ड़काव्य प्रबन्ध काव्य का एक भेद है। खण्ड़ काव्य में जीवन के किसी एक भाग का वर्णन किया गया है। इसमें महाकाव्य की भांति न तो आकार बड़ा होता है और न ही व्यापक विषय। भारतीय काव्यशास्त्र में जितनी गहनता एवं सूक्ष्मता से महाकाव्यों ध्यान दिया गया है उतना खण्ड़ काव्यों का महत्व नहीं दिया गया है। बाबू गुलाबराय ने खण्ड़ काव्य के बारे में कहा है कि खण्ड़काव्य में एक ही घटना को प्रमुखता देकर इसमें जीवन के किसी एक पहलू की झांकी सी मिल जाती है। बलदेव उपाध्याय ने खण्ड़काव्य के बारे में कहा है कि वह काव्य जो मात्रा में महाकाव्य से छोटा परन्तु गुणों में कदापि शून्य न हो, खण्ड़काव्य कहलाता है। खण्ड़काव्य विषयी प्रधान होता है जिसमें लेखक कथानक के स्थूल ढांचे में अपने वैयक्तिक विचारों का प्रसंगानुसार वर्णन करता है। इस प्रकार से खण्ड़काव्य प्रबन्ध का ही एक भाग है लेकिन इसमें भी तत्व हैं जो महाकाव्य में होते हैं लेकिन अन्तर केवल इतना है कि जहां महाकाव्य में विस्तार होता है वही खण्ड़काव्य में संकुचन होता है। महाकाव्य में जीवन के सभी पक्षों को चित्रित किया जाता है वहीं खण्ड़काव्य में कथा खण्ड़ रूप में ही चित्रित की जाती है। खण्ड़काव्य की कथावस्तु ख्यात, इतिहास प्रसिद्ध, कल्पित किसी भी प्रकार की हो सकती है। इसमें जीवन के किसी विशिष्ट पक्ष या मार्मिक घटना का सर्वांगपूर्ण वर्णन किया जाता है। खण्ड़काव्य में एक ही रस पूर्णता के साथ कथा में विद्यमान रहता है। खण्ड़काव्य की कथा का क्रमिक विकास होता है। वस्तुतः खण्ड़काव्य किसी काव्य रूप का खण्ड़ न होकर शब्ध अनुभूति के जिस प्रभाव की ओर इशारा करता है जिसमें मानव के अपने सम्पूर्ण जीवन को सुविख्यात करता है लेकिन उनसे विरचित खण्ड़ काव्य को देखकर उनके अन्य रूपों की अनदेखी नहीं की जा सकती है। कथा में आरम्भ, विकास और अन्त तीनों ही विस्थितियां स्पष्ट रूप नियोजित होती हैं। माधव कौशिक ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में योगदान की तरह खण्ड़काव्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है।

मानवता को स्थान : माधव कौशिक जी ने अपने खण्ड़काव्य में कहा है कि जब हम मानवता को अपनाते हैं तो हमारे समाज एवं देश में अच्छा बनाता है जिससे मानव अपने देश को उच्चता के शिखर पर पहुंचता है। मानव ऐसा जीव है जो हर असम्भव कार्य को भी सम्भव कर लेता है। मानव को अपना सारा जीवन दूसरे लोगों की भलाई करने के लिए किया जाना चाहिए क्योंकि मानवता ही श्रेष्ठ है।

माधव कौशिक ने अपने खण्ड़काव्य में मनुष्यता को बड़ा माना है और कहा है कि मनुष्यता ही सबसे बड़ी है और मनुष्य की सेवा करना मानव का सबसे बड़ा धर्म है। मानव में यह मनुष्यता उसके जन्म के साथ ही प्रारम्भ हो जाती है और उसमें उसके जीवन के अन्त तक रहती है। अर्थात् इस सृष्टि के आरम्भ में ही इस मनुष्यता का जन्म हो गया था।

ँहर युग में हज़ारों सीधे(सच्चे मानवों की
सारी शक्ति, सारी ऊर्जा रदानवों के पास ही बंदी मिलेगी।

माधव जी ने कहा है कि मानवता से कोई भी बड़ा धर्म नहीं होता है लेकिन मनुष्य मानवता के धर्म को छोड़कर इन्सान के द्वारा बनाये गये धर्म को ही अपना धर्म मान बैठा है जिससे मानव समाज अपने वास्तविक रूप को भूल बैठा है और समाज में शान्ति और समृधि समाप्त होती जा रही है लेकिन आज भी ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं है जो मानवता को अपने हित एवं स्वार्थों से अधिक स्थान देते हैं और संसार की भलाई के लिए हमेशा लगे रहते हैं। प्राचीन काल में जितने भी महापुरुष जैसे राम, कृष्ण, महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध हुये हैं उन्होंने मानवता के लिए अपना सारा जीवन ही लगा दिया परन्तु आज हम न तो ऐसे महान लोगों के आदर्शों को नहीं मान रहे हैं और न ही उनके आचरण को अपना रहे हैं। यदि आज हम महान लोगों के आचरण को अपने जीवन में उतार ले तो संसार की प्रगति सम्भव है। यदि मानव सच्चाई के मार्ग पर आचरण करता रहेगा तो वह निश्चित रूप से उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेगा। मानवता की रक्षा के लिए मानव के सर्वांगींण विकास में आने वाली सामाजिक, आर्थिक,

राजनैतिक और धार्मिक बाधाओं को दूर किया जाना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को अत्याचार, अनाचार आदि का डटकर सामना करना चाहिए। हमें सदा सच्चाई के मार्ग पर चलकर आडम्बर, आलस्य आदि से दूर रहना चाहिए।

श्रद्धा एवं प्रेम का महत्व - माधव कौशिक ने अपने खण्ड़काव्य में श्रद्धा एवं प्रेम के महत्व को स्वीकार किया है। श्रद्धा समर्पण मांगती है और समर्पण बिना शर्त का होता है। श्रद्धा का क्षेत्र संकल्प शक्ति का विकास और भावना का प्रयोग है। श्रद्धा और प्रेम एक दूसरे से जुड़े हुये हैं। जिसके प्रति श्रद्धा होती है तो प्रेम भी अपने आप ही हो जाता है। या यह कहा जा सकता है कि जिससे हम प्रेम करते हैं उसके प्रति श्रद्धा पैदा हो जाती है। प्रेम में इतनी शक्ति है कि व्यक्ति बड़े से बड़े संकट से भी लड़ जाता है। प्रेम ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य में एक अलौकिक दिव्य शक्ति का विकास होता है।

''राधिका तुम्हारे प्रति मेरे अगाध प्रेम की
अभिव्यक्ति अनेकानेक रूपों में हुई जिस कण भी
तुम्हारी मोहनी छवि निहारता।''

न्याय एवं नैतिकता को महत्व - माधव कौशिक के अनुसार नैतिकता के द्वारा समाज में एक अच्छे वातावरण का निर्माण किया जाता है तथा नैतिकता ही व्यक्ति को सही एवं गलत की पहचान कराती है। नैतिकता के कारण ही व्यक्ति अपने अच्छे गुणों का प्रदर्शन करता है। नैतिक मूल्यों के अभाव में मानव एक पशु से निम्न बन जाता है।

''किन्तु दम्भी कहाँ मानते है
आततायी कहां झुकते हैं
न्याय की, धर्म की,
नैतिकता और नीतिशास्त्र।''

भावनाओं एवं सम्बन्धों का महत्व - भावनायें मानव को एक दूसरे से जोड़े रखती हैं। भावनाओं के द्वारा ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। भावना ही सत्य और नित्य है मनुष्य के आपसी सम्बन्ध भी भावनाओं पर निर्भर करते हैं। इसीलिए हम जिसके प्रति जैसी भावना रखते हैं उसके प्रति ऐसा ही आचरण करते हैं। भावुकता ही गुण जो मानव को मानव बनाती है। भावुकता तो देवताओं के पास भी नहीं है।

''मानवों को जो अलग करता है सबसे
देवताओं, दानवों के पास सब है
किन्तु भावुकतता भरी वह
कसमसाती टीस
उनके पास कब है।''

सत्य का महत्व - माधव कौशिक जी का मानना है कि सत्य की हमेशा जीत होती है। सत्य एक भाव है। जो निश्छलता, अहिंसा एवं पवित्रता का प्रतीक होती है। सत्य का आचरण बड़ा ही महान होता है। सत्य का आचरण करने में अनेक समस्यायें आती हैं लेकिन अन्त में सत्य की ही जीत होती है।

''सत्य की दृष्टि में समरसता बहुत है
सत्य की आंखों में हैं सपने सुहाने
सत्य के चेहरे नहीं पड़ते पुराने
सत्य हर युग में रहा है और रहेगा।''

लोकतन्त्र का समर्थन - लोकतन्त्र में शासन के बारे में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रकार से जनता निर्णय लेती है। लोकतन्त्र इस विचारधारा पर आधारित है कि व्यक्ति शिक्षित हो या अशिक्षित, अच्छा हो या बुरा, सभी का समान महत्व है। किसी ने देखा कि उन्नति एवं विकास के लिए लोकतन्त्र का सफल होना आवश्यक होता है। लेकिन सत्ता में बैठे स्वार्थी, पाखण्डी, लालची, पापी शासक लोकतन्त्र को सफल नहीं होने देते हैं।

''कायरों के पास हैं ब्रह्म के
सारे दिव्य अस्त्रों के खजाने
कामी, लोलुप, भ्रष्ट राजा और
राजाओं के राजा कर रहे हैं
आखेट जनता का अभी भी।''

अन्याय एवं अव्यवस्था का दमन - माधव कौशिक जी ने कहा है कि मानव को कभी भी अन्याय को नहीं सहना चाहिए। अन्याय को सहना अन्याय करने से भी बड़ा पाप है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह हो रहे अन्याय का विरोध करे। क्योंकि यदि अन्याय का विरोध नहीं किया जाता है तो अन्याय और बढ़ता जाता है। आज संसार में दिन प्रतिदिन अन्याय एवं अत्याचार में वृद्धि होती जा रही है और मानव इसका विरोध नहीं कर रहा है।

''अच्छाई बुराई के समक्ष नमस्तक
होकर घुटने कभी न टेके उनकी सत्ता को
कभी न स्वीकारे अन्याय को सहन करना
अन्याय करने से अधिक पाप कर्म है।''

माधव कौशिक जी चाहते हैं कि अन्याय का दमन किया जाना चाहिए। जिससे अव्यवस्था का अन्त हो सके। अव्यवस्था को समाप्त करने के लिए समाज में प्रेम, त्याग, शान्ति आदि गुणों का विकास किया जाना चाहिए।

''जब तक व्यवस्था की जड़ों से
यह अव्यवस्था दुरुस्त हो जाती नहीं
तब तक न शान्ति होगी इस धरा पर।''

देश सर्वोपरि - देश मानवों की भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकात्मकता से बनता है। किसी देश का विकास तभी सम्भव है जब देश में उन्नति एवं विकास का वातावरण हो। समाज में दया, प्रेम, त्याग, नैतिकता एवं नशामुक्तता हो। समाज के सभी लोग आपस में मिल जुलकर रहें। किसी देश का समाज जितना नैतिक होगा वह समाज उतना ही खुशहाल होगा। लेकिन आज का युवा भोगवादी संस्कृति की चपेट में आ गया है जिससे समाज एवं देश अवनति की ओर जा रहा है। कौशिक जी कहते हैं कि देश को अपने स्वार्थों एवं निजी पारिवारिक सम्बन्धों से अधिक महत्व देना चाहिए।

''अपने पुत्रों, अपने मित्रों, अपनी जाति
धर्म अपना, अपने समुदाय के लोगों के
हित की बात करना
पाप है, अन्याय भी।''

युद्ध का विरोध - कौशिक जी का मानना है कि युद्ध का भंयकर परिणाम झेलना पड़ता है। युद्ध के बाद चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। चारों तरफ विनाश ही विनाश ही दिखायी देता है। इसलिए युद्ध को रोका जाना चाहिए।

''हर युद्ध का परिणाम बस विध्वंश ही है

''हर युद्ध का परिणाम बस विध्वंश ही है
युद्ध चाहे जब भी हो, जैसे भी हो
जिसके मध्य हो, चाहे जो जीते या हारे
युद्ध के बाद चीखें और आहें, करुणा की पुकारें।''

राजनैतिक भ्रष्टाचार का विरोध - इन्होंने राजनैतिक भ्रष्टाचार का विरोध किया है और कहा है कि राजनीति तो एक मायालोक के समान है जिसमें अनेक माया रूपी राक्षस जैसे छल, मोह, ईर्ष्या, घमंड, स्वार्थ आदि रहते हैं। राजनीति ऐसी चीज है जिसमें सत्ता ही दिखाई ही देती है। इसमें नैतिक मूल्यों का कोई महत्व नहीं होता है।

''राजनेता की असली पहचान तो सम्भव नहीं है
क्योंकि ये लोग छल, कपट, अहंकार, लोभ, धोखे
के मखौटों को अपने चेहरों पर ढक लेते हैं
मुखौटे पर मुखौटे, कितने उतारेंगे आप।''

निष्कर्ष : इस प्रकार से इन्होंने अपने खण्डकाव्य में मानवता को महत्व, श्रद्धा एवं प्रेम को महत्व, देश एवं समाज को विशेष स्थान, नैतिकता को महत्व दिया है साथ ही अन्याय एवं अव्यवस्था का विरोध किया है। इन्होंने सत्य और सच्चाई को स्वीकार करने एवं उसका आचरण करने पर बल दिया है। इनका मानना है कि व्यक्ति को अन्याय का विरोध करना चाहिए। भावनाओं को स्थान दिया है और कहा है कि भावना मानव में प्रेम का विकास होता है। समाज में भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए लोगों में नैतिकता का विकास किया जाना चाहिए। इन्होंने युद्व का विरोध किया है क्योंकि युद्ध के बाद विनाश ही विनाश होता है। उनमें न्याय, समानता, प्रेम, त्याग आदि गुणों का विकास किया जाना चाहिए। व्यक्ति के विकास के लिए लोकतन्त्र को स्थान देने को स्वीकार किया है।

सन्दर्भ सूची :

1. कौशिक, माधव, सुनो राधिका, यश प्रकाशन, दिल्ली ९1994): पृ। 54-55
2. कौशिक, माधव, सुनो राधिका, यश प्रकाशन, दिल्ली (1994): पृ। 34
3. कौशिक, माधव, सुनो राधिका, यश प्रकाशन, दिल्ली (1994): पृ। 56-57
4. कौशिक, माधव, सुनो राधिका, यश प्रकाशन, दिल्ली (1994): पृ। 55
5. कौशिक, माधव, सुनो राधिका, यश प्रकाशन, दिल्ली (1994): पृ। 21
6. कौशिक, माधव, लौट आओ पार्थ, संजय प्रकाशन, दिल्ली (2000): पृ। 39
7. कौशिक, माधव, लौट आओ पार्थ, संजय प्रकाशन, दिल्ली (2000): पृ। 63
8. कौशिक, माधव, लौट आओ पार्थ, संजय प्रकाशन, दिल्ली (2000): पृ। 49
9. कौशिक, माधव, लौट आओ पार्थ, संजय प्रकाशन, दिल्ली (2000): पृ। 41
10. कौशिक, माधव, लौट आओ पार्थ, संजय प्रकाशन, दिल्ली (2000): पृ। 40
11. कौशिक, माधव, लौट आओ पार्थ, संजय प्रकाशन, दिल्ली (2000): पृ। 22
12. रावत, हरिकृष्ण, इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशोलॉजी, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली ९1998)
13. गौतम, डॉ। सुरेश, नवगीत, इतिहास और उपलब्धि।
14. मिश्र, प्रसाद, भवानी, गीत को अभी पंख देने है।